कलाम

KALAM ACADEMY, SIKAR

3rd Grade Test Series-2025 L-2 [Hindi] Minor - 02 [REVISED ANSWER KEY] HELD ON : 18/08/2025

Q.	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**	**12**	**13**	**14**	**15**	**16**	**17**	**18**	**19**	**20**
Ans.	2	1	4	2	3	3	2	1	3	1	4	4	3	3	4	3	4	3	3	3
Q.	**21**	**22**	**23**	**24**	**25**	**26**	**27**	**28**	**29**	**30**	**31**	**32**	**33**	**34**	**35**	**36**	**37**	**38**	**39**	**40**
Ans.	4	4	2	4	3	4	1	3	1	2	2	2	1	2	1	3	3	2	1	2
Q.	**41**	**42**	**43**	**44**	**45**	**46**	**47**	**48**	**49**	**50**	**51**	**52**	**53**	**54**	**55**	**56**	**57**	**58**	**59**	**60**
Ans.	1	1	3	3	2	4	4	2	4	1	2	3	3	4	2	1	2	4	1	1
Q.	**61**	**62**	**63**	**64**	**65**	**66**	**67**	**68**	**69**	**70**	**71**	**72**	**73**	**74**	**75**	**76**	**77**	**78**	**79**	**80**
Ans.	3	3	1	3	3	4	2	1	3	2	2	1	1	4	2	1	1	2	1	2
Q.	**81**	**82**	**83**	**84**	**85**	**86**	**87**	**88**	**89**	**90**	**91**	**92**	**93**	**94**	**95**	**96**	**97**	**98**	**99**	**100**
Ans.	3	1	4	2	1	2	2	3	1	1	2	1	3	1	2	1	4	1	1	2
Q.	**101**	**102**	**103**	**104**	**105**	**106**	**107**	**108**	**109**	**110**	**111**	**112**	**113**	**114**	**115**	**116**	**117**	**118**	**119**	**120**
Ans.	4	1	4	2	3	1	2	3	4	1	3	2	3	1	4	3	1	4	2	1
Q.	**121**	**122**	**123**	**124**	**125**	**126**	**127**	**128**	**129**	**130**	**131**	**132**	**133**	**134**	**135**	**136**	**137**	**138**	**139**	**140**
Ans.	2	3	2	1	3	1	2	4	1	3	2	3	1	2	4	1	2	3	1	2
Q.	**141**	**142**	**143**	**144**	**145**	**146**	**147**	**148**	**149**	**150**										
Ans.	3	3	2	4	1	3	1	2	3	4										

1. Ans. 2

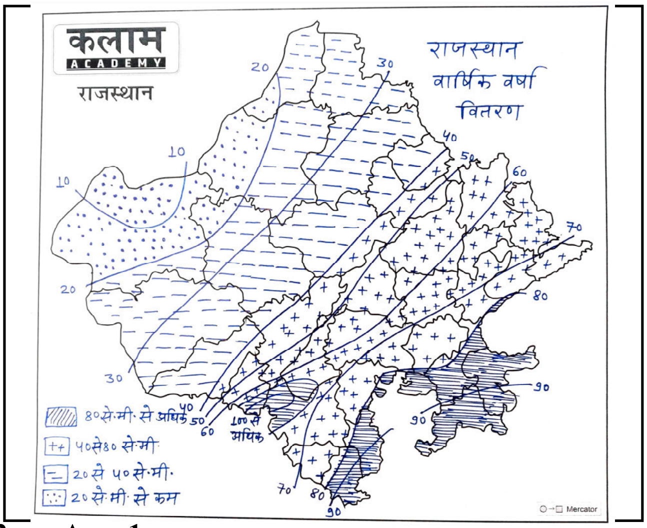

2. Ans. 1

3. Ans. 4

अर्द्धशुष्क/स्टेपी जलवायु प्रदेश

- 25 सेमी समवर्षा रेखा व अरावली के मध्य के क्षेत्र में अर्द्धशुष्क जलवायु मिलती है।
- इस क्षेत्र में औसत वार्षिक वर्षा 25 सेमी से अधिक व 50 सेमी से कम होती है।
- जोधपुर इस जलवायु प्रदेश का प्रतिनिधि जिला है।
- इसमें गंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर, टोंक, चूरू, सीकर, झुन्झुनूं, नागौर, पाली व जालौर का अधिकांश क्षेत्र आता है।

4. Ans. 2

- **कोपेन के जलवायु वर्गीकरण में प्रयुक्त वर्णाक्षरों का अर्थ**- A-उष्ण आर्द्र, B-शुष्क, C-उपार्द्र, W-पूर्ण शुष्क, S-अर्द्ध शुष्क/स्टेपी, w-शीत शुष्क, s-ग्रीष्म शुष्क, h-गर्म, g-गंगा तुल्य जलवायु।

5. Ans. 3

- सामान्यत: राजस्थान में होने वाली औसत वार्षिक वर्षा **57.51 सेमी.** है।
- राजस्थान की औसत वार्षिक वर्षा भारत में सबसे कम है अत: राजस्थान भारत का सबसे शुष्क व कम वर्षा वाला राज्य है।
- आर्थिक समीक्षा 2024-25 के अनुसार राज्य में 1 जून से 30 सितम्बर 2024 तक की समयावधि में वास्तविक वर्षा 662.44 मिमी दर्ज की गई जो कि सामान्य वर्षा 417.46 मिमी की तुलना में 58.68 प्रतिशत अधिक रही है।

6. Ans. 3

- अक्टूबर के प्रारम्भ में कर्क रेखा पर बना न्यून दाब का क्षेत्र समाप्त हो जाता है, अत: मानसूनी हवाएँ लौटने लगती हैं।
- मानसूनी हवाओं का लौटना मानसून का प्रत्यावर्तन कहलाता है।
- **मानसून का प्रत्यावर्तन शरद् ऋतु (अक्टूबर से दिसम्बर)** के दौरान होता है।
- इस समय हवाएँ शांत, हल्की व अत्यधिक परिवर्तनशील होती हैं।
- इस ऋतु में राजस्थान में वर्षा नहीं होती है।

7. Ans. 2

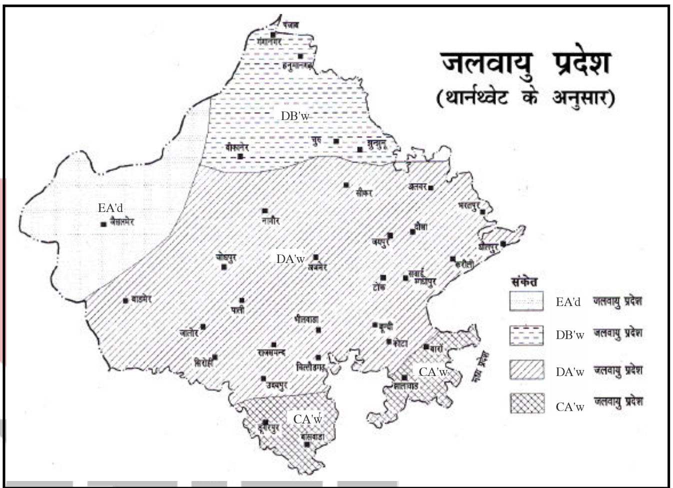

8. Ans. 1

- **पछुआ पवनों** के साथ भूमध्य सागर से आने वाले **शीतोष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों** से राजस्थान समेत उत्तरी पश्चिमी भारत में शीतकालीन वर्षा होती है।
- इन **भूमध्य सागरीय चक्रवातों** को **पश्चिमी विक्षोभ/गोल्डन ड्रोप** भी कहते हैं।
- **पश्चिमी विक्षोभ** के कारण होने वाली शीतकालीन वर्षा को स्थानीय भाषा में **'मावठ'** कहते है। जो जनवरी फरवरी में होती है। **मावठ'** रबी की फसल विशेषकर **गेहूँ, चना, जौ, सरसों, मालटा एवं किन्नू** के लिए वरदान होती है।

9. Ans. 3

BShw - यह जलवायु अर्द्धशुष्क या स्टेपी जलवायु प्रदेश में पाई जाती है जिसके अंतर्गत दक्षिणी जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, सिरोही, पाली, जोधपुर, नागौर, सीकर, चुरू, झुन्झुनूं जिले आते हैं। नागौर जिला इसका प्रतिनिधि जिला है।

10. Ans. 1

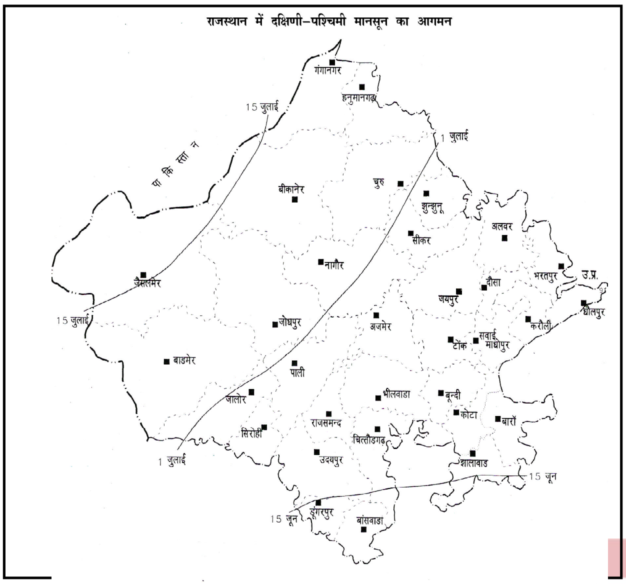

11. Ans. 4

- राजस्थान में वर्षा ऋतु का काल मध्य जुलाई से सितम्बर तक है। जिसमें हिन्द महासागर की ओर से दक्षिणी-पश्चिमी मानसूनी पवनें चलती हैं।
- राजस्थान में मानसून के पहुँचने की सामान्य तिथि 15 जून है। लेकिन 15 से 20 जून या जून के अंतिम सप्ताह तक मानसून राजस्थान में प्रवेश करता है।
- राजस्थान की कुल वार्षिक वर्षा की 90 से 95 प्रतिशत वर्षा मानसूनी पवनों से होती है। (जुलाई से सितम्बर तक 3 माह में)

12. Ans. 4

- कई बार संवहन करती हुई वायु के साथ समुद्र की ओर से आने वाली आर्द्र हवाएँ मिलती हैं। जिससे वज्र तूफान (Thunder Storm) बनते हैं, जिनमें तड़ित (बिजली), मेघ गर्जन के साथ वर्षा व ओलावृष्टि भी होती है। इस वर्षा को मानसून पूर्व की वर्षा (Pre Monsoon) भी कहा जाता है, जो अप्रेल-मई माह में होती है।
- राजस्थान में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर चलने पर वायु की तीव्रता का प्रभाव कम होता जाता है, राज्य के दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी भाग का पर्वतीय, पठारी व वनस्पति युक्त होना भी वायु के प्रभाव को कम करता है।

13. Ans. 3

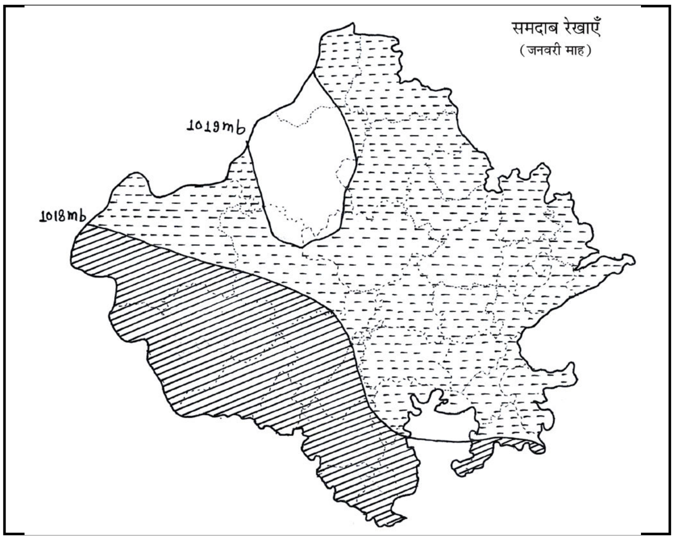

14. Ans. 3

- अरब सागरीय शाखा के मार्ग में अवरोध नहीं होने के कारण मानसूनी पवनें बिना रूके आगे बढ़ जाती है।
- अरब सागरीय शाखा से केवल दक्षिणी राजस्थान (मुख्यत: सिरोही) में वर्षा होती है।
- बंगाल की खाड़ी वाली शाखा के लिए अरावली की अवस्थिति अवरोध उत्पन्न करती है अत: इस शाखा से राजस्थान में अधिकांश वर्षा प्राप्त होती है तथा यह शाखा मुख्यत: राजस्थान के पूर्वी भाग में वर्षा करवाती है।

नोट- सम्पूर्ण राजस्थान में बंगाल की खाड़ी शाखा से अधिक वर्षा प्राप्त होती है। केवल दक्षिणी राजस्थान में अरब सागर की शाखा से अधिक वर्षा होती है।

- दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पश्चिम व पूर्व से पश्चिम की ओर जाने पर वर्षा की मात्रा कम होती जाती है तथा वर्षा की अनिश्चितता व परिवर्तनशीलता बढ़ती जाती है।

15. Ans. 4

Aw - यह जलवायु उष्ण कटिबंधीय आर्द्र जलवायु प्रदेश में पाई जाती है जिसके अंतर्गत डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, दक्षिणी चित्तौड़गढ़, झालावाड़, दक्षिणी बाराँ जिले आते हैं। बाँसवाड़ा जिला इसका प्रतिनिधि जिला है। ये प्रदेश सवाना तुल्य घास के मैदानों से साम्यता रखते हैं।

कलाम ACADEMY

16. Ans. 3

- सर्वाधिक दैनिक तापान्तर- जैसलमेर (सम)।
- सर्वाधिक वार्षिक तापान्तर- चूरू।
- सर्वाधिक दैनिक तापान्तर वाले माह- अक्टूबर व नवम्बर।
- न्यूनतम दैनिक तापान्तर वाले माह- जुलाई व अगस्त।

17. Ans. 4

बंगाल की खाड़ी शाखा

- राजस्थान में अरब सागर की शाखा से बंगाल की खाड़ी की शाखा की तुलना में अत्यन्त कम वर्षा होती है क्योंकि अरब सागरीय शाखा की दिशा अरावली पर्वतमाला के समानान्तर दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व है अत: अरब सागरीय शाखा के मार्ग में अवरोध नहीं होने के कारण ये बिना रूके आगे बढ़ जाती है।
- अरब सागरीय शाखा से केवल दक्षिणी राजस्थान (मुख्यत: सिरोही) में वर्षा होती है।
- बंगाल की खाड़ी वाली शाखा के लिए अरावली की अवस्थिति अवरोध उत्पन्न करती है अत: इस शाखा से राजस्थान में अधिकांश वर्षा प्राप्त होती है तथा यह शाखा मुख्यत: राजस्थान के पूर्वी भाग में वर्षा करवाती है।

18. Ans. 3

- राजस्थान में सर्वाधिक लौह अयस्क जयपुर व दौसा से उत्पादित किया जाता है।

जिला	प्रमुख क्षेत्र
जयपुर	मोरीजा-बानोल, बोमानी, चौमू सामोद क्षेत्र
दौसा	नीमला-रायसेला, लालसोट क्षेत्र
उदयपुर	नाथरा की पाल, थूर-हुण्डेर
सीकर	रामपुरा, डाबला
झुंझुनू	डाबला-सिंघाना, ताओन्दा, काली पहाड़ी
भीलवाड़ा	पुर-बनेड़ा, जहाजपुर, बीगोद
बूंदी	लोहारपुरा, मोहनपुरा
करौली	देदरोली, खोरा, लिलोती, टोडूपुरा

19. Ans. 3

राजस्थान के बजट 2025-26 के प्रावधानों के अनुसार '**इंस्टीट्यूट ऑफ माइन्स**' की स्थापना **उदयपुर** में किया जाना प्रस्तावित है।

20. Ans. 3

- राज्य में ताँबे के 13 करोड़ टन से अधिक के भण्डार हैं, जिनमें से 9 करोड़ टन के लगभग ताँबा भण्डार खेतड़ी सिंघाना क्षेत्र (झुन्झुनूं के खेतड़ी-सिंघाना से सीकर के रघुनाथगढ़ तक पट्टी) में पाये जाते हैं।

उत्पादन क्षेत्र-

- **अलवर**- खो - दरीबा, थानागाजी, कुशलगढ़, सेनपरी, भगत का बास, भगोनी।
- **अजमेर**- हनोतिया व गोलिया, सावर, मोहनपुरा, फरकिया

21. Ans. 4

खनिज - उत्पादक क्षेत्र
फेल्सपार - मकरेरा (अजमेर)
मेग्नेसाइट- अजमेर, सेन्दड़ा (पाली)
वर्मीक्यूलाइट - अजमेर
बॉल क्ले - **बीकानेर**
चाइना क्ले (कैओलिन) - **अलवर,** बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर
बेण्टोनाइट - **बाड़मेर, बीकानेर,** सवाईमाधोपुर
फ्लोर्सपार / फ्लोराइट - मांडो की पाल (डूंगरपुर), चौकरी-चापोली (सीकर)
पाइराइट - सलादीपुरा (सीकर)
जास्पर - जोधपुर

रॉक फॉस्फेट - उदयपुर, जैसलमेर, बाँसवाड़ा, जयपुर

22. Ans. 4

रॉक फॉस्फेट -

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र-

- **उदयपुर** - झामर कोटड़ा, डाकन कोटड़ा, माटोन, ढोल की पाटी, सीसारमा, कानपुर
- **जैसलमेर** - बिरमानिया, लाठी, फतेहगढ़

कैल्साइट -

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र-

- **सिरोही**- बेल्का पहाड़, खिला
- **उदयपुर**- गेफल, राबचा, ढिंकली
- **भीलवाड़ा**- खेड़ा तरला, तेजा का बास, अमलदा, घरटा, जैतपुरा

बैराइट्स –

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र–

- **उदयपुर**– रेलपातलिया
- **अलवर**– सैनपुरी, जाहिर का खेड़ा, भानखेड़ा, रामसिंहपुरा, करोली, जामरोली, उमरेण, गिरारा, धोलेरा
- **राजसमंद**– देलवाड़ा–केसुली–नाथद्वारा बेल्ट

फ्लोराइट –

मांडो की पाल (डूंगरपुर), चौकरी–चापोली (सीकर)

23. Ans. 2

जैसलमेर बेसिन के प्राकृतिक गैस क्षेत्र–

- मनिहारी टिब्बा, चिन्नेवाला टिब्बा, कमली ताल, मोहनगढ़, रामगढ़, घोटारु, तनोट, डांडेवाला, सादेवाला, बाघेवाला, राजेश्वरी, बकरीवाला।
- घोटारु में हीलियम मिश्रित उच्च श्रेणी की गैस के भण्डार मिले हैं।

नोट – रोहिल क्षेत्र सीकर का यूरेनियम उत्पादक क्षेत्र है।

24. Ans. 4

राजस्थान के एकाधिकार (100%) वाले खनिज

- सीसा–जस्ता
- सेलेनाइट
- वॉलेस्टोनाइट

विभिन्न खनिजों के उत्पादन में राजस्थान का प्रतिशत अंश

- जिप्सम (93%)
- एस्बेस्टोस (89%)
- घीया पत्थर / सोप स्टोन (85%)
- रॉक फॉस्फेट (90%)
- फेल्सपार (70%)
- केल्साइट (70%)
- वुल्फ्रेमाइट (50%)
- तांबा (36%)
- अभ्रक (22%)

25. Ans. 3

- राजस्थान में 81 विभिन्न प्रकार के खनिजों के भण्डार हैं। इनमें से वर्तमान में 58 प्रकार के खनिजों का खनन किया जा रहा है।
- देश में सर्वाधिक खनिज विविधता राजस्थान में पायी जाती हैं। इस कारण राजस्थान को खनिजों का अजायबघर कहते हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक खनिज भण्डारण अरावली में पाया जाता है, इसलिए अरावली को ''खनिजों का भण्डारगृह'' कहा जाता है।
- राजस्थान में खनिजों का क्षेत्रीय वितरण किसी एक प्राकृतिक विभाग में संकेन्द्रित न होकर छितरा हुआ है।
- अधात्विक खनिजों के उत्पादन में राजस्थान प्रथम स्थान पर है।
- खानों की संख्या की दृष्टि से राजस्थान का देश में प्रथम स्थान है तथा देश की 19 प्रतिशत खानें यहाँ स्थित है।

26. Ans. 4

डोलोमाइट उत्पादन क्षेत्र–

- बिट्ठलदेव, त्रिपुरा सुन्दरी, (बांसवाड़ा)
- इसवाल, करोली–कसोली (राजसमन्द)
- धारियावाद (प्रतापगढ़)
- बाजला–काबरा (अजमेर)
- माण्डल (भीलवाड़ा),
- गौरेला–चांदा, खेड़ी (चित्तौड़गढ)
- कोटपुतली, भैंसलाना, रामगढ़ (जयपुर)

27. Ans. 1

पन्ना		**उत्पादन क्षेत्र–**
• राजसमन्द	–	कालागुमान, टिक्की (तीखी), देवगढ़, गढ़बोर
• उदयपुर	–	गोगुन्दा
• अजमेर	–	राजगढ़

तामड़ा उत्पादन क्षेत्र–

• टोंक	–	राजमहल, जनकपुरा, कुशलपुरा, गांवरी, बागेश्वर
• अजमेर	–	सरवाड़, खरखारी
• भीलवाड़ा	–	कमलपुरा, बलियाखेड़ा

हीरा उत्पादन क्षेत्र–

• प्रतापगढ़	–	केसरपुरा, मानपुरा

28. **Ans. 3**

- **भीलवाड़ा- रामपुरा आगूचा,** गुलाबपुरा, पुर बनेड़ा, तिरंगे, समुदी, देवास, देवपुरा, रेवाड़ा (यहाँ से प्राप्त जस्ता के शोधन हेतु चित्तौड़गढ़ जिले के चंदेरिया मे निजी क्षेत्र में वेदांता कंपनी द्वारा एक जिंक स्मेल्टर संयंत्र स्थापित किया गया है।)

29. **Ans. 1**

कोयला उत्पादन क्षेत्र-

- **बाड़मेर** - गिरल, कपूरड़ी, जालीपा, बोथिया, भाड़खा, गूंगा, शिव
- **नागौर** - कसनऊ, इग्यार, मातासुख, मोकला, मेड़ता रोड़
- **बीकानेर** - पलाना, बरसिंगसर, चानेरी, गुढ़ा, बीथनोक, हाड़ला, गंगा सरोवर, मुंध, माधोगढ़, केसरदेशर
- लिग्नाइट कोयला जैसलमेर क्षेत्र में भी मिलता है।

30. **Ans. 2**

सोना उत्पादन क्षेत्र-

- **बाँसवाड़ा** - जगपुरा भूकिया, आनंदपुरा भूकिया, देलवारा पेटी।

अभ्रक उत्पादन क्षेत्र-

- भीलवाड़ा - नात की नेरी, तूनका (टूंका), सिंदिरियास, दांता भूणास
- टोंक - बरला, मानखण्ड
- जयपुर - लक्ष्मी तथा बंजारी, मोती की खान
- उदयपुर - भगतपुरा, चम्पागुढ़ा

मैगनीज उत्पादन क्षेत्र-

- **बाँसवाड़ा** - लीलवानी, नरड़िया, काला खूंटा, तलवाड़ा, सिवोनिया, कांसला, कांचला, रूपाखेड़ी व खेरिया, इटाला, घाटिया, ताँबेसरी (गुरारिया से राठी मुरी बेल्ट), तिम्यामौरी/तिम्मामौरी।
- **उदयपुर** - छोटी सर, बड़ी सर, सरुपपुर, रामौसन
- **राजसमन्द** - नेगड़िया

ताँबा उत्पादन क्षेत्र-

- **झुन्झूनूँ** - खेतड़ी - सिंघाना क्षेत्र, चाँदमारी, कोल्हन, मन्धान (मदान - कुदान), अकावाली (अखवाली), बरखेड़ा, बबाई, बनवासा, ढोलमाला, चिंचोरी, सतकुई, सूरहरि, टुण्डा, करमारी, आदि।

31. **Ans. 2**

राजस्थान खनिज नीति 2024

- **प्रारम्भ** - 4 दिसम्बर, 2024
- राजस्थान खनिज नीति 2024 का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण तथा सामुदायिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए आर्थिक विकास के लिए राज्य के प्रचुर खनिज संसाधनों का लाभ उठाते हुए टिकाऊ, पारदर्शी और जिम्मेदार खनिज विकास को बढ़ावा देना है।
- **विजन** -आर्थिक वृद्धि, तकनीकी के साथ रोजगार सृजन तथा धारणीय संसाधन प्रबंधन द्वारा राजस्थान को भारत के खनिज क्षेत्र में एक नेतृत्वकारी राज्य के रूप में स्थापित करना।

32. **Ans. 2**

- चाइना क्ले को **केओलिन** नाम से भी जाना जाता है। जो मुख्यतया अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा व बीकानेर में पाई जाती है।

33. **Ans. 1**

बाड़मेर-सांचौर बेसिन के ऑयल फील्ड-

- **मंगला, भाग्यम, एश्वर्या, कामेश्वरी, रागेश्वरी, वंदना, सरस्वती, शक्ति, विजया** आदि।

34. **Ans. 2**

अधात्विक खनिज

↓

- **आणविक खनिज :** यूरेनियम, थोरियम, अभ्रक, लिथियम इत्यादि।
- **उर्वरक खनिज :** जिप्सम, रॉक फास्फेट, पोटाश, पाइराइट्स इत्यादि।
- **क्ले खनिज :** फायर क्ले, बॉल क्ले, चाइना क्ले, मुल्तानी मिट्टी इत्यादि।
- **बहुमूल्य पत्थर :** पन्ना, हीरा, तामड़ा इत्यादि।
- **इमारती पत्थर :** संगमरमर, ग्रेनाइट, सैण्ड स्टोन इत्यादि।
- **ऊर्जा खनिज :** प्राकृतिक गैस, पेट्रोलियम, कोयला इत्यादि।
- **अन्य खनिज :** ऐस्बेस्टॉस, गेरु, फेल्सपार इत्यादि।

35. Ans. 1

- **डिस्ट्रिक्ट मिनरल फाउंडेशन** (डी.एम.एफ.) एक गैर - लाभकारी निकाय के रूप में स्थापित एक ट्रस्ट है, जो खनन कार्यों से प्रभावित जिलों में, खनन प्रभावित व्यक्तियों और क्षेत्रों के हित और लाभ के लिए काम करता है।

36. Ans. 3

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 155 के अनुसार राज्य के राज्यपाल को राष्ट्रपति द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र द्वारा नियुक्त किया जाता है।

37. Ans. 3

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 192 के अनुसार - राज्य विधानमंडल का कोई सदस्य अनु. 191(1) में वर्णित निर्हरता से ग्रस्त होने पर इनकी अयोग्यता (दल-बदल को छोड़कर) से संबंधित विवाद का निर्णय राज्यपाल करता है। ऐसा निर्णय करने से पहले राज्यपाल राष्ट्रीय निर्वाचन आयोग से राय लेता है तथा उसकी राय के अनुसार कार्य करता है। राज्यपाल का यह निर्णय अंतिम होता है।

38. Ans. 2

- राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1 नवम्बर, 1956 ई. से 7वें संविधान संशोधन द्वारा राजस्थान को राज्य की श्रेणी में शामिल किया गया। अत: इस दिन से राजस्थान में राजप्रमुख का पद समाप्त कर दिया गया तथा राज्यपाल का पद सृजित हुआ। **श्री गुरुमुख निहाल सिंह** को **25 अक्टूबर, 1956 ई.** को राजस्थान के पहले राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया। इन्होंने अपना पदभार 1 नवम्बर, 1956 को संभाला।

39. Ans. 1

- 7वें संविधान संशोधन 1956 की **धारा 7** द्वारा अनुच्छेद 158(3क) जोड़कर यह प्रावधान किया गया कि यदि दो या अधिक राज्यों का एक राज्यपाल है तो उसको दिये जाने वाली उपलब्धियाँ और भत्ते राष्ट्रपति द्वारा तय मानकों के हिसाब से राज्य मिलकर प्रदान करेंगे।

40. Ans. 2

- मुख्यमंत्री के कर्त्तव्यों का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 167 में है जो कि निम्न है-

  अनुच्छेद 167 के अनुसार मुख्यमंत्री का यह कर्त्तव्य होगा कि वह-

  (a) राज्य सरकार के प्रशासनिक और विधायी मामलों से संबंधित **मंत्रिपरिषद के विनिश्चिय की सूचना** राज्यपाल को देगा।

  (b) राज्य सरकार के प्रशासनिक और विधायी मामलों से संबंधित जो जानकारी राज्यपाल माँगे, वह उसे देगा।

  (c) किसी विषय जिस पर किसी मंत्री ने विनिश्चिय कर लिया हो लेकिन मंत्रिपरिषद ने विचार नहीं किया हो तो राज्यपाल के अपेक्षा किये जाने पर वह उसे मंत्रिपरिषद के समक्ष विचार हेतु रखेगा।

41. Ans. 1

- राजस्थान के वर्तमान मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा क्रमश: 26वें और व्यक्तिश: 14वें मुख्यमंत्री है। इन्होंने 15 दिसम्बर, 2023 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की।

42. Ans. 1

- विधानसभा में सदस्यों का **प्रत्यक्ष निर्वाचन सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार** के आधार पर होता है।
- फर्स्ट पास्ट द पोस्ट सिस्टम से गुप्त मतदान प्रणाली से होता है। इस प्रकार कथन में खुली मतदान प्रणाली गलत है क्योंकि विधानसभा सदस्यों का निर्वाचन बंद मतदान प्रणाली से होता है।

43. Ans. 3

- विधानमंडल के लिए संविधान के विभिन्न अनुच्छेद व उनमें उल्लेखित प्रावधान निम्नानुसार हैं-

  1. अनुच्छेद 172 - विधानसभा का कार्यकाल
  2. अनुच्छेद 173 - विधानमंडल के सदस्यों की योग्यताएँ
  3. अनुच्छेद 188 - विधानमंडल के सदस्यों की शपथ के संबंध का प्रावधान।
  4. अनुच्छेद 191 - विधानमंडल के सदस्यों की अयोग्यताएँ

44. Ans. 3

45. Ans. 2

- **अनु.** 214 के तहत प्रत्येक राज्य के लिए एक उच्च न्यायालय होगा।
- **अनु.** 231- संसद विधि बनाकर दो या अधिक राज्यों के लिए अथवा दो या अधिक राज्यों और किसी संघ शासित प्रदेश के लिए एक ही उच्च न्यायालय स्थापित कर सकती है।
- भारत के संविधान में प्रत्येक राज्य के लिए एक उच्च न्यायालय की व्यवस्था की गई है लेकिन **7वें संविधान संशोधन अधिनियम** 1956 में संसद को अधिकार दिया गया है कि वह दो या दो से अधिक राज्यों एवं एक संघ राज्य क्षेत्र के लिए एक साझा उच्च न्यायालय की स्थापना कर सकती है।

46. Ans. 4

- राजस्थान उच्च न्यायालय के संदर्भ में कुछ विशेष तथ्य –
  प्रथम मुख्य न्यायाधीश- के.के.वर्मा (कमलकांत वर्मा)
  वर्तमान मुख्य न्यायाधीश – के.आर.श्रीराम
  सर्वाधिक अवधि तक रहने वाले मुख्य न्यायाधीश- कैलाश वांचू
  राजस्थान उच्च न्यायालय के ऐसे न्यायाधीश जिन्होंने अपना पद त्याग (Resigned) किया – एस.के.गर्ग

47. Ans. 4

- राज्य शासन सचिवालय वह स्थान है जहाँ से शासन व प्रशासन के सत्ता-सूत्रों का संचालन होता है। राजस्थान शासन सविचालय का एकीकृत रूप **13 अप्रेल** 1949 में अस्तित्व में आया।
- **मुख्य सचिव का चयन राज्य का मुख्यमंत्री करता है।**
- **अवशिष्ट वसीयतदार**- मुख्य सचिव वे सभी कार्य भी करता है जो विशिष्ट रूप से किसी सचिव को आवण्टित नहीं किये जाते है
- वर्तमान मुख्य सचिव – **श्री सुंधाश पंत**

48. Ans. 2

- राजस्थान उच्च न्यायालय के संदर्भ में तथ्य –
  राज्य के प्रथम मुख्य सचिव – के. राधाकृष्णन्
  सर्वाधिक अवधि वाले मुख्य सचिव – भगतसिंह मेहता
  न्यूनतम कार्यकाल वाले मुख्य सचिव – आर.डी. थापर
  मुख्य सचिव जो सचिवालय पुनर्गठन समिति (1969) के अध्यक्ष रहे – मोहन मुखर्जी

49. Ans. 4

- जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का अध्यक्ष (आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 की धारा 25 के द्वारा राज्य सरकार द्वारा निर्धारित) जिला कलेक्टर होता है।

50. Ans. 1

- राजस्थान पुलिस का गठन जनवरी, 1951 में किया गया तथा राजस्थान पुलिस सेवा का गठन भी वर्ष 1951 में हुआ।

51. Ans. 2

- बलवंत राय मेहता समिति की सिफारिश के आधार पर पंचायती राज अधिनियम पारित कर उसे लागू करने वाला राजस्थान पहला राज्य बना।
- 2 अक्टूबर, 1959 को नागौर जिले के बगदरी गाँव में प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने देश की पहली त्रिस्तरीय पंचायती राज प्रणाली की शुरूआत की।

52. Ans. 3

- ग्राम सभा का उल्लेख संविधान के अनुच्छेद 243A में है।
- ग्राम सभा में गाँव के समस्त मतदाता शामिल होते हैं।
- ग्राम सभा की बैठक हेतु 1/10 सदस्यों (गणपूर्ति) की उपस्थिति अनिवार्य होती है।

53. Ans. 3

- नगरीय निकायों हेतु संविधान के विभिन्न अनुच्छेद निम्नानुसार है-

243P	-	परिभाषाएँ
243Q	-	नगरपालिकाओं का गठन
243R	-	नगरपालिकाओं की सरंचना
243S	-	वार्ड समितियों आदि का गठन और सरंचना

54. Ans. 4

- दिनाँक 17 जुलाई, 2025 को जारी नोटिफिकेशन के द्वारा राजस्थान लोक सेवा आयोग में एक अध्यक्ष व 10 सदस्यों (कुल 11) का प्रावधान किया गया है।

कलाम ACADEMY

55. Ans. 2

क्र.सं.	काल-परक	प्रवृत्ति-परक	काल-परक
1	प्राचीन काल	वीरगाथा काल	1050 से 1450 ई.
2	पूर्व मध्य काल	भक्तिकाल	1450 से 1650 ई.
3	उत्तर मध्य काल	शृंगार, रीति एवं नीतिपरक काल	1650 से 1850 ई.
4	आधुनिक काल	विविध विषयों एवं विधाओं से युक्त	1850 ई. से अब तक

56. Ans. 1

- ख्यात वंशावली तथा प्रशस्ति लेखन का विस्तृत रूप है। ख्यातों में राजवंश की पीढ़ियाँ, जन्म मरण की तिथियाँ, किन्हीं विशेष घटनाओं का उल्लेख तथा जिस वंश के लिए ख्यात लिखी गई हो उसके व्यक्ति विशेष के जीवन संबंधी विवरण रहता है।
- ख्यातों का विस्तृत रूप 16वीं शताब्दी के अन्त से बनना आरम्भ हुआ तो इससे पहले का वर्णन कल्पना के आधार पर दिया गया। अर्थात् 16वीं शताब्दी के पूर्व का वर्णन जो इन ख्यातों से उपलब्ध होता है अधिकांश में कपोल कल्पित ही है।

57. Ans. 2

रास–

- यह साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें नृत्य, गायन और अभिनय तीनों कलाओं का समावेश मिलता है।

चर्चरी–

- ये रचनाएँ विभिन्न उत्सवों में ताल व नृत्य के साथ गायी जाती है।

सोरठा–

- ये छंद एवं दोहों के रूप में होते हैं।

58. Ans. 4

बीसलदेव रासो, बसंत विलास, मलय सुंदरी कथा प्रारंभिक कालीन लौकिक साहित्य की रचनाएँ हैं जबकि रणमल छंद प्रारंभिक कालीन चारण साहित्य की रचना है।

59. Ans. 1

उपर्युक्त प्रश्नानुसार विकल्प 2, 3 व 4 पूर्णतया सत्य है जबकि विकल्प 1 असत्य है क्योंकि भरतेश्वर बाहुबली रास व्रजसेन सूरि की रचना न होकर शालिभद्र सूरि की रचना है।
व्रजसेन सूरि की रचना **भरतेश्वर बाहुबली घोर** है जो राजस्थानी भाषा की पहली रचना मानी जाती है।

60. Ans. 1

- राज्य स्तर पर 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' की शुरूआत 29 मई को केन्द्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने रलावता, अजमेर से की।
- यह अभियान राजस्थान के सभी जिलों के 3959 गांवों में चलाया गया व इससे 7.90 लाख किसान लाभांवित हुए।

61. Ans. 3

- 30 अप्रैल, 2025 को राज्य सरकार ने अधिसूचना जारी कर 'इलेक्ट्रोथैरेपी चिकित्सा पद्धति बोर्ड' का गठन किया।
- इस बोर्ड में एक अध्यक्ष व पाँच सदस्य होंगे–
  अध्यक्ष: आयुर्वेद आयुष विभाग के प्रमुख सचिव
  सदस्य: हेमंत सेठिया, गोविंदलाल सैनी, कुलदीप वर्मा, हरिसिंह बूमरा एवं एसएस पावेदिया।
- सचिव एवं कार्यकारी अधिकार: निदेशक आयुर्वेदिक विभाग

62. Ans. 3

- खेलो इण्डिया यूथ गेम्स के 7वें संस्करण का आयोजन 4 से 15 मई तक बिहार की मेजबानी में किया गया। इन खेलों में राजस्थान कुल 60 पदक (24 स्वर्ण, 12 रजत व 24 कांस्य) जीतकर पदक तालिका में तीसरे स्थान पर रहा।
- इन खेलों में राजस्थान की पुरुष वर्ग की कबड्डी टीम ने कांस्य, बॉस्केटबाल पुरुष वर्ग टीम ने रजत, रग्बी महिला वर्ग टीम ने कांस्य पदक जीते।
- इन खेलों में राजस्थान ने सर्वाधिक 14 पदक (9 स्वर्ण, 2 रजत, 3 कांस्य) साइक्लिंग में जीते। (साइक्लिंग में राजस्थान देश में शीर्ष पर रहा)

63. Ans. 1

- प्राइम पॉइंट फाउंडेशन द्वारा 15वें संसद रत्न अवॉर्ड 2025 हेतु लोकसभा एवं राज्यसभा के 17 सांसदों तथा दो संसदीय स्थायी समितियों को उनके उत्कृष्ट संसदीय प्रदर्शन हेतु नामित किया गया है।
- राजस्थान के पुरस्कार विजेता सांसद:
  1. मदन राठौड़ (राज्यसभा सांसद, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष)
  2. पी.पी. चौधरी (लोकसभा सांसद, भाजपा)

कलाम ACADEMY

64. Ans. 3

• देवनारायण कॉरीडार	–	भीलवाड़ा
• राजस्थान का तीसरा प्रधानमंत्री दिव्याशा केन्द्र	–	कोटा
• राजस्थान का पहला साइबर सपोर्ट सेन्टर	–	जयपुर
• राजस्थान का पहला वन्दे भारत मेंन्टेनेंस डिपो	–	जोधपुर

65. Ans. 3

- बीपीएल परिवारों को स्वरोजगार से जोड़कर गरीबी रेखा से ऊपर लाने के उद्देश्य से 'पंडित दीनदयाल उपाध्याय गरीबी मुक्त गांव योजना' लागू की गई है।
- योजना के प्रथम चरण में प्रत्येक जिले से 122 गांव (कुल 5002 गांव) चिन्हित किए गए हैं।
- इन चिन्हित परिवारों को 21 हजार रुपये की आर्थिक सहायता और आत्मनिर्भर कार्ड दिया जाएगा।

66. Ans. (4)

♦ विकास सदैव वृद्धि को प्रभावित करे ऐसा आवश्यक नहीं है क्योंकि विकास सार्थक वृद्धि के अभाव में देखा जा सकता है। जैसे- संज्ञानात्मक, सामाजिक, नैतिक विकास आदि।

67. Ans. (2)

♦ वृद्धि विकास का एक भाग है जिसका संबंध मात्रात्मक शारीरिक बढ़ोतरी से है। वृद्धि परिपक्वता पर आकर समाप्त हो जाती है और विकास मृत्यु तक जारी रहता है। अत: वृद्धि के अभाव में देखा जा सकता है।

68. Ans. (1)

69. Ans. (3)

♦ अलग-अलग बच्चे चलने की प्रक्रिया के अलग-अलग चरण में हैं। अत: यह व्यक्तिगत भिन्नता के सिद्धांत से संबंधित है। पीडियाट्रीशियन का कथन सिफैलोकॉडल सिद्धांत की पुष्टि करता है। वहीं यह कहना कि भले समय कम या ज्यादा लगे यह सभी के लिए सामान्य प्रक्रिया है, समान प्रतिमान के सिद्धांत से संबंधित है।

70. Ans. (2)

♦ राहुल का पहले टूटे हुए निवाले खाना और फिर स्वयं निवाले तोड़कर खाना एकीकरण (इंटीग्रेशन) के सिद्धांत की पुष्टि करता है।

71. Ans. (2)

♦ विकास परिपक्वता और अधिगम का गुणनफल है।

72. Ans. (1)

♦ उत्तर बाल्यावस्था में कामवासना सुप्त रहती है। अधिकांश समय सामाजिक उपलब्धियों के कार्यों में बीतता है।

73. Ans. (1)

♦ एरिक्सन के अनुसार 1 वर्ष आसक्ति के विकास का उचित समय है।

74. Ans. (4)

♦ पूर्व बाल्यावस्था के नाम :-
खिलौनों की अवस्था
समूह पूर्व अवस्था
विद्यालय पूर्व अवस्था
तैयारी की अवस्था (अध्यापक)
समस्या की अवस्था (माता-पिता)

75. Ans. (2)

♦ 6 माह में लगभग दाँत आते हैं। (अस्थायी दूध के दाँत) हालांकि दाँतों का निर्माण गर्भावस्था में हो जाता है।

76. Ans. (1)

♦ जिन कार्यों में छोटी मांसपेशियों का प्रयोग हो, उन्हें सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल कहते हैं। जैसे- लिखना, वाद्ययंत्र बजाना आदि।

77. Ans. (1)

♦ मैक्डूगल द्वारा प्रदत्त 14 मूल प्रवृत्ति संवेग की सूची में भूख का संबंध भोजनान्वेषण से है।

78. Ans. (2)

♦ कोल व ब्रूस के अनुसार बाल्यावस्था संवेगात्मक विकास का अनोखा काल है।

79. Ans. (1)

♦ सामाजीकरण की पहली इकाई परिवार है।

80. Ans. (2)

- ईर्ष्या 18 माह में विकसित होती है।

81. Ans. (3)

- लैंगिक अंतर को समझना शैशवावस्था का विकासात्मक कार्य है।

82. Ans. (1)

- न्यूरी बॉनफेनबेनर के पारिस्थितिकी मॉडल में क्रोनोसिस्टम (घटनामंडल) एक ऐसा तंत्र है जो सामाजिक आर्थिक पक्ष यहाँ तक की जीवन को ही पूरी तरह बदल के रखे दे। जैसे- युद्ध, सुनामी, सड़क हादसा आदि।

83. Ans. (4)

- ब्रूनर का सिद्धांत नैतिक विकास नहीं संज्ञानात्मक विकास से है जिसके उन्होंने तीन चरण बताये हैं-

सक्रिय :-	जन्म - 2 वर्ष
प्रतिबिम्बात्मक :-	2- 7 वर्ष
संकेतात्मक :-	7 - 11 वर्ष

84. Ans. (2)

- वस्तुओं को उनके गणितीय मात्रात्मक मानक जैसे लम्बाई, चौड़ाई आदि के आधार पर वर्गीकृत करने की क्षमता श्रेणीकरण (पंक्तिबद्धता) कहलाती है।

85. Ans. (1)

- पूर्व संक्रियात्मक अवस्था में बच्चा चिन्हों, प्रतीकों, प्रतिबिम्बों से संज्ञान का निर्माण करता है क्योंकि इस अवस्था में भाषा और कल्पना तीव्रता से विकसित होती है।

86. Ans. (2)

- सामाजिक क्रम संपोषित उन्मुखता में व्यक्ति मानता है कि नियम सर्वोपरि है और हर व्यक्ति को नियमों का पालन करना चाहिए।

87. Ans. (2)

- Pre convential स्तर में नैतिक निर्णय व्यक्तिगत लाभ और सजा से बचने पर आधारित होते हैं क्योंकि इस स्तर पर नैतिकता के मानक दूसरों के द्वारा तय होते हैं।

88. Ans. (3)

- अच्छा लड़का, भली लड़की की अवस्था में नैतिकता, सामाजिक प्रतिष्ठा, प्रशंसा से तय होती है। लोग क्या कहेंगे, दुनिया क्या सोचेगी ऐसी बातें।

89. Ans. (1)

- एरिक्सन के मनोसामाजिक विकास के सिद्धांत में एक चार वर्ष के बालक का संबंध पहल बनाम दोष की अवस्था से है।

90. Ans. (1)

- स्कैफॉल्डिंग अस्थायी मदद की वह मात्रा है जो अधिगमकर्त्ता को विकास के एक स्तर से दूसरे स्तर पर पहुँचाती है।

91. Ans. 2

- परमेश्वर-ईश्वर का पर्यायवाची है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प 'अतिथि' के पर्यायवाची हैं।

92. Ans. 1

- आकाश-अंतरिक्ष का पर्यायवाची
- हरम-अंत:पुर का पर्यायवाची
- चक्षुहीन, प्रज्ञाचक्षु-अंधा का पर्यायवाची
- तम, अँधेरा-अंधकार का पर्यायवाची
- अजन्मा, विधाता-अज का पर्यायवाची

93. Ans. 3

- बुद्धिमान्-मेधावी का पर्यायवाची है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प 'शत्रु' के पर्यायवाची हैं।

94. Ans. 1

- अज्ञ-मूर्ख का पर्यायवाची है।
- विद्वान्-मनीषी का पर्यायवाची है।
- जीवश्रेष्ठ-मनुष्य का पर्यायवाची है।

95. Ans. 2

- पुष्परस-शहद का पर्यायवाची है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प 'सुरभि' के पर्यायवाची हैं।

96. Ans. 1

- फाटक-सोना का पर्यायवाची है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प 'सेना' के पर्यायवाची हैं।

97. Ans. 4

- सैरंध्री-सहेली का पर्यायवाची है।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प 'हरिण' के पर्यायवाची हैं।

कलाम ACADEMY

98. Ans. 1

- सरीसृप, उरग, नाग, सर्प, व्याल, विषधर, भुजंग, अहि, पन्नग-साँप के पर्यायवाची हैं।
- मतंग, करी-हाथी के पर्यायवाची हैं।
- हरि-शेर का पर्यायवाची है।

99. Ans. 1

- कलेवर-शरीर का पर्यायवाची है।
- वाग्देवी, गिरा-सरस्वती के पर्यायवाची हैं।

100. Ans. 2

- प्रज्ञा, मनीषा, मति-बुद्धि के पर्यायवाची हैं।
- अनिल, वात, समीर-पवन के पर्यायवाची हैं।
- आत्मभू, चतुरानन, नाभिज-ब्रह्मा के पर्यायवाची हैं।
- तनया, दुहिता (पुत्री), आत्मज (पुत्र) के पर्यायवाची हैं।

101. Ans. 4

- जलाशय, ताल, डल-झील के पर्यायवाची हैं।
- मलय, गंधसार-चंदन के पर्यायवाची हैं।
- चित्रक, व्याघ्र-बाघ के पर्यायवाची हैं।
- इष्टगंध (सुरभि), मृगेंद्र (शेर), महिषी (भैंस) के पर्यायवाची हैं।
- मकर, शफरी-मछली के पर्यायवाची हैं।

102. Ans. 1

- कम, इधर, अब, तेज, अवश्य, बहुत, आज, कहाँ-'अविकारी' शब्द हैं।
- छात्र (संज्ञा), सुन्दर, मीठा (विशेषण), मेरा (सर्वनाम) हैं।

103. Ans. 4

- वे अव्यय शब्द, जो क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध कराते हैं। जैसे-धीरे-धीरे, सहसा, शीघ्र, तेज, मीठा, अचानक, यथाशक्ति आदि।
- अचानक-रीतिबोधक क्रिया विशेषण

104. Ans. 2

- समुच्चय बोधक-ये अव्यय क्रिया की विशेषता न बतलाकर दो शब्दों, वाक्याशों या वाक्यों को परस्पर जोड़ने का काम करते हैं। इन्हें योजक भी कहा जाता है। यथा-और, किंतु, परंतु, लेकिन, क्योंकि।
- सहसा-रीतिबोधक क्रिया विशेषण
- निकट-स्थानबोधक क्रिया विशेषण
- उतना-परिमाणबोधक क्रिया विशेषण

105. Ans. 3

- संबंधबोधक-जो अविकारी शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर उनका संबंध दूसरे शब्दों से जोड़ते हैं, वे 'सबंधबोधक' अव्यय शब्द गिने जाते हैं। हिंदी में मूल संबंधबोधक अव्यय कम हैं। संबंधबोधक अव्यय प्राय: संज्ञाओं की विभक्तियों के पीछे आते हैं। यथा-बीच, आगे, योग्य, सामने, पास, पश्चात्, पीछे, तरफ, ओर, आस-पास, सहारे, बल, साथ, संग, अपेक्षा।
- लगातार-कालबोधक क्रिया विशेषण

106. Ans. 1

- विस्मयादिबोधक- जिन अविकारी शब्दों से वक्ता के मन में भावों (हर्ष, शोक, विस्मय, आश्चर्य, तारीफ) का बोध होता हैं, वे विस्मयादिबोधक शब्द कहे जाते हैं। यथा- वाह!, आहा, धन्य-धन्य, ओहो, अच्छा, ठीक-ठीक, अरे आदि।
- ताकि, अथवा-समुच्चयबोधक हैं।
- शायद-क्रिया विशेषण

107. Ans. 2

- साथ-संबंधबोधक है।
- ऊपर, प्रतिदिन, बराबर-क्रिया विशेषण हैं।

108. Ans. 3

- मेरे घर के सामने मंदिर है-संबंधबोधक
- उपर्युक्त तीनों विकल्प क्रिया विशेषण सहित वाक्य हैं।

कलाम ACADEMY

109. Ans. 4

- व्यधिकरण समुच्चय बोधक- जो शब्द एक या एक से अधिक आश्रित वाक्यों को प्रधान वाक्य से जोड़ते हैं, वे 'व्यधिकरण समुच्चय बोधक' कहलाते हैं। यथा-क्योंकि, चूँकि, ताकि, यदि-तो, यद्यपि-तथापि, जैसा-वैसा, जब-तब।
  उदाहरण-यदि वे पढ़ता तो पास हो जाता।

110. Ans. 1

- ठीक-ठीक- विस्मयादिबोधक अव्यय है।
- जैसा-वैसा- समुच्चयबोधक
- मुख्यत:- क्रिया विशेषण
- आस-पास- संबंधबोधक

111. Ans. 3

- गरल, हलाहल, कालकूट- विष के पर्यायवाची हैं।
- कुलिश, पवि-वज्र के पर्यायवाची हैं।
- आखेट, अहेर-शिकार के पर्यायवाची हैं।
- सखी, सहचरी-सहेली के पर्यायवाची हैं।
- बांधवी (बहिन), बहेलिया (शिकारी), विग्रह (शरीर) के पर्यायवाची हैं।

112. Ans. 2

- जगतीचर (मनुष्य), जनार्दन, मुकुन्द (विष्णु) के पर्यायवाची हैं।
- अजातारि-युधिष्ठिर का पर्यायवाची है।

113. Ans. 3

- मुखभूषण- पान का पर्यायवाची हैं।
- उपर्युक्त तीनों विकल्प 'सोना' के पर्यायवाची हैं।

114. Ans. 1

- अर्क, दिवाकर, सविता, रवि, आदित्य, दिनमणि, दिनेश, भानू, दिनकर, दिवाकर, भास्कर-यह सभी 'सूर्य' के पर्यायवाची हैं।
- चमू-सेना का पर्यायवाची है।
- हेम, कंचन- ये दोनों 'सोना' के पर्यायवाची हैं।

115. Ans. 4

- अचल, अद्रि, गिरी, धरणीधर, नग, महीधर, शैल-ये सभी 'पहाड़' के पर्यायवाची हैं।
- मारुत (पवन), शैलसुता, गिरिजा, शैलजा (पार्वती) के पर्यायवाची हैं।

116. Ans. 3

- मेघ, नीरद- बादल के पर्यायवाची हैं।
- जलज-कमल का पर्यायवाची है।

117. Ans. 1

- सिंधुजा (लक्ष्मी), शर्वरी (रात), तरंग (लहर) के पर्यायवाची हैं।
- उर्मि- किसी भी शब्द का पर्यायवाची नहीं है।
- ऊर्मि-लहर का पर्यायवाची है।

118. Ans. 4

- नौका, कश्ती, तरी- ये सभी 'लहर' के पर्यायवाची हैं।
- निषंग-तरकश का पर्यायवाची है।

119. Ans. 2

- Face value – अंकित मूल्य
- Fund – निधि, धन
- Forfeit – जब्त करना

120. Ans. 1

- Federation – परिसंघ
- Evidence – साक्ष्य
- Feed back – पुनर्भरण
- Forward – अग्रवर्ती

121. Ans. 2

- Execute – निष्पादन करना
- Escort – अनुरक्षक
- Ex-officio – पदेन
- Fake – नकली

122. Ans. 3

- Endorsement – पृष्ठांकन
- Exempt – छूट करना
- Edition – संस्करण
- Enrolment – भर्ती, नामांकन

123. Ans. 2

- Derorum – शिष्टता, शालीनता, मर्यादा
- Deed – विधि

124. Ans. 1

- Dislocation – विस्थापन
- Deed – विलेख (विधि)
- Dissolve – भंग करना
- Deficit – घाटा

125. Ans. 3

स्नेह – छोटों के प्रति प्रेम
श्रद्धा – छोटों के द्वारा बड़ों के प्रति उत्पन्न स्निग्ध भाव
प्रणय – विपरीत लिंगी के प्रति उत्पन्न स्निग्ध भाव
वात्सल्य – माता-पिता का संतान के प्रति प्रेम

126. Ans. 1

निद्रा – गहरी नींद
तन्द्रा – ऊँघना, झपकी लेना
निंदा – बुराई करना

127. Ans. 2

- किसी व्यवस्था की देख-रेख करने वाला – निरीक्षक
- किसी की योग्यता की जाँच करने वाला – परीक्षक
- सामान्य सलाह – परामर्श
- किसी व्यक्ति, वस्तु, या विचार की गुण और दोषों की विवेचना करना – आलोचना

128. Ans. 4

- क्षमता – शारीरिक शक्ति
- योग्यता – गुणयुक्त विशेषता
- प्रयास – अत्यधिक प्रयत्न
- प्रयत्न – कार्य करने का हल्का भाव

129. Ans. 1

- समारोह में औपचारिक सम्मान – अभिनंदन
- आये हुए व्यक्ति का सम्मान – स्वागत
- बड़ाई – प्रशंसा
- यश का बखान – स्तुति

130. Ans. 3

- अपनों से बड़ों को किया जाने वाला अभिवादन – प्रणाम
- किसी समूह को किया जाने वाला अभिवादन – नमस्कार
- एक व्यक्ति विशेष को किया जाने वाले अभिवादन – नमस्ते
- सबूत – प्रमाण

131. Ans. 2

- एककर्मक क्रिया – जिस क्रिया के साथ केवल एक ही कर्म है (प्राय: प्रधान (मुख्य) कर्म या निर्जीव कर्म) तो वह एककर्मक क्रिया होती है। जैसे – अनुराग ने आम और केले खरीदे।

132. Ans. 3

- कभी-कभी कर्म गौण (लुप्त) भी होता है परंतु विश्लेषण करने पर कर्म बाहर निकल आता है, वहाँ पर सकर्मक क्रिया होती है।
- सोनल बजा रही है = सकर्मक क्रिया

133. Ans. 1

- वह गाँव में रहता है – अकर्मक क्रिया
- मुर्गा सुबह बांग दे रहा है – अकर्मक क्रिया
- वह खाकर आया है – पूर्वकालिक क्रिया
- मैं अंग्रेजी बोल सकता हूँ – संयुक्त क्रिया

134. Ans. 2

- गिरना, बिगड़ना, उड़ना – अकर्मक क्रिया
- निकालना – सकर्मक क्रिया

135. Ans. 4

- दादाजी बगीचे में टहल रहे हैं – अकर्मक क्रिया
- राम ने सीता को थप्पड़ मारा – द्विकर्मक क्रिया
- ठूंठ खड़ा है – अकर्मक क्रिया
- गीता हँसकर चली गई – पूर्वकालिक क्रिया

कलम ACADEMY

136. Ans. 1

- जब किसी वाक्य में वास्तव में किसी क्रिया का प्रयोग नहीं होता है, जबकि किसी संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण शब्दों को क्रिया की तरह काम में लिया जाता है।
- वह मुझे झूठलाने लगा – नामधातु क्रिया

137. Ans. 2

- जया ने खाना बना लिया – संयुक्त क्रिया
- कविता सविता से पत्र पढ़वाती है– प्रेरणार्थक क्रिया
- साँप जमीन पर रेंग रहा है – अकर्मक क्रिया
- मैं रोज सुबह टहलने चलता हूँ – अकर्मक क्रिया

138. Ans. 3

- सकर्मक क्रिया – वे क्रियाएँ जिनका प्रभाव वाक्य में प्रयुक्त कर्त्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़ता है।
- अकर्मक क्रिया – ऐसी क्रिया जिसके साथ कर्म मौजूद नहीं रहता है अथवा जिस क्रिया का प्रभाव कर्त्ता पर पड़ता है।
- पूर्वकालिक क्रिया – जब किसी वाक्य में दो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हो तथा उनमें से एक क्रिया दूसरी क्रिया से पहले सम्पन्न हुई हो तो पहले सम्पन्न होने वाली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है।
- संयुक्त क्रिया – जब वाक्य में दो या दो से अधिक क्रियाओं का प्रयोग एक साथ कर दिया जाता है, तो उन्हें संयुक्त क्रिया कहते हैं।

139. Ans. 1

- वह दिन भर खाता रहा – सकर्मक क्रिया
- मेरा भाई बहुत अच्छा है– अपूर्ण अकर्मक क्रिया
- बच्चा रोने लगा – संयुक्त क्रिया
- वह सड़क पर हँस रहा था – अकर्मक क्रिया

140. Ans. 2

- अकर्मक क्रिया के दो भेद –
  1. पूर्ण अकर्मक क्रिया 2. अपूर्ण अकर्मक क्रिया

141. Ans. 3

- सफेद – विशेषण
  तेज – अव्यय
  घोड़ा – संज्ञा
  भागता है – क्रिया

142. Ans. 3

- विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती है–
  1. मूलावस्था
  2. उत्तरावस्था
  3. उत्तमावस्था
- तुलावस्था – यह कोई अवस्था नहीं है।

143. Ans. 2

- बाढ़ से लाखों लोग प्रभावित हुए – अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण
- उपर्युक्त तीनों उदाहरण परिमाणवाचक विशेषण के हैं।

144. Ans. 4

- विशेष्य – वे शब्द (संज्ञा या सर्वनाम) जिनकी विशेषता बतलायी जाती है
- प्रविशेषण – वे शब्द जो विशेषण की भी विशेषता बतला देता है।
- विशेषण – वे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बतलाते हैं।
- अव्यय – जिन शब्दों के रूप में लिंग, वचन, कारक, पुरुष और काल के कारण कुछ भी बदलाव नहीं आता है।

145. Ans. 1

- वे विशेषण जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की अनिश्चित संख्या का बोध कराते हैं। उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
- रेल दुर्घटना में सैकड़ों यात्री घायल हो गए – अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

146. Ans. 3

- वह बहुत ईमानदार है – प्रविशेषण
- यह मेरी पुस्तक है – निश्चिय वाचक सर्वनाम
- यह पानी तो सबका है – सार्वनामिक विशेषण
- वह कुछ खा रहा है – अनिश्चिय वाचक सर्वनाम

147. Ans. 1

- सुखी, हार्दिक, लब्ध – विशेषण
- साहित्य – संज्ञा

कलाम ACADEMY

148. Ans. 2

- ♦ जटिल – विशेषण
- ♦ क्षमा, चर्चा, जागरण – संज्ञा

149. Ans. 3

- ♦ निश्चित संख्यावाचक विशेषण – वे विशेषण जो किसी संज्ञा या सर्वनाम की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं जैसे-
- ♦ तुम चारों कल कहाँ गये थे।

150. Ans. 4

- ♦ तीखा, लम्बा, ताजा – गुणवाचक विशेषण
- ♦ तनिक – अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

कलाम ACADEMY